nmnh

क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय

भोपाल

क्षेत्रीय प्राकृ

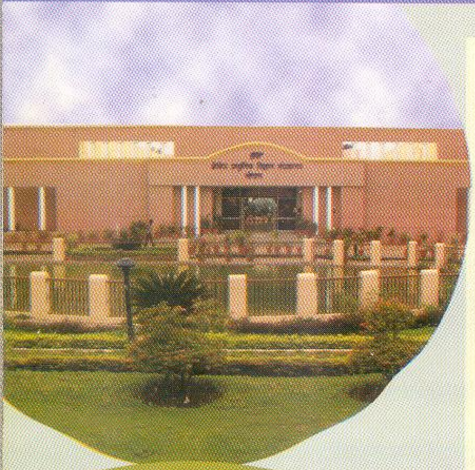

राष्ट्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय की शाखा-क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय अनौपचारिक पर्यावरण शिक्षा का एक केंद्र है, जिसका मुख्य उद्देश्य दीर्घाओं, विभिन्न आंतरिक एवं बाह्य गतिविधियों के माध्यम से लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना है। भारत के मध्यप्रदेश राज्य में झीलों की नगरी के रूप में प्रसिद्ध भोपाल के पर्यावरण परिसर में स्थित यह संग्रहालय सन् 1997 में जनसामान्य के लिए खोला गया था।

संग्रहालय, मध्य भारत की जैव विविधता एवं हमारे आस-पास उपस्थित जटिल प्राकृतिक ताने-बाने को समझने का अनोखा अवसर प्रदान करता है। दीर्घाओं के प्रदर्शों को; प्रतिरूपों, ट्रांसलाईट एवं दृश्य-श्रव्य माध्यमों के सहयोग से दर्शाया गया है। डायरोमा एवं प्रदर्श, चयनित विषय वस्तुओं के क्रम में प्रस्तुत किए गए हैं। संग्रहालय में जीव विज्ञान कम्प्यूटर कक्ष एवं खोज केंद्र भी है, जहाँ ज्ञान पाना मनोरंजन से भरपूर होता है। इसके अतिरिक्त, अस्थाई प्रदर्शनी हॉल में समय-समय पर विभिन्न विषय वस्तुओं पर आधारित प्रदर्शनियाँ आयोजित की जाती हैं।

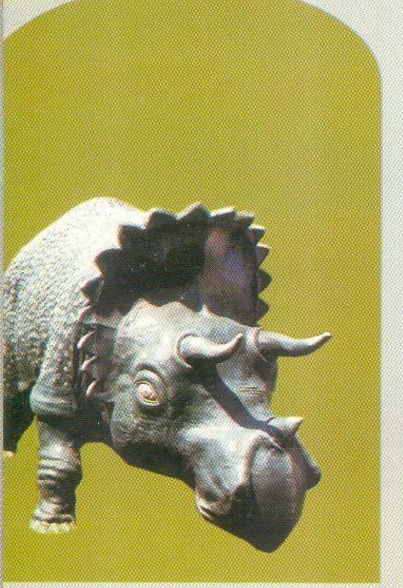

उद्देश्य

- मध्य भारत की वनस्पतियों, प्राणियों तथा भूगर्भीय जानकारियों से युक्त प्रदर्शों को विकसित करना।
- प्रदर्शों तथा शैक्षिक क्रियाकलापों के माध्यम से वनस्पतियों, प्राणियों एवं मानव के पारस्परिक संबंध एवं उनके संरक्षण के महत्व को समझाना।
- जनमानस को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने हेतु भू-विज्ञान एवं जीव विज्ञान के स्कूली पाठ्यक्रम को समृद्ध करने वाले प्रदर्शों एवं क्रियाकलापों का आयोजन करना।
- बच्चों, युवाओं तथा पारिवारिक समूहों में पर्यावरण के प्रति चेतना विकसित करने के लिए उचित शैक्षिक क्रियाकलापों का आयोजन करना।
- विकलांगों के लिए विशिष्ट शैक्षिक गतिविधियों का आयोजन करना।
- पर्यावरण शिक्षा के लिए उपयोगी लोकप्रिय शिक्षा सामग्री का प्रकाशन करना।
- पर्यावरण शिक्षा का बढ़ावा देने के लिए मध्य भारत में कार्यरत विभिन्न संस्थानों के सहयोग से शिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना।
- पर्यावरण शिक्षा को व्यापक बनाने के लिए राज्यव्यापी शैक्षिक क्रियाकलाप आयोजित करना।

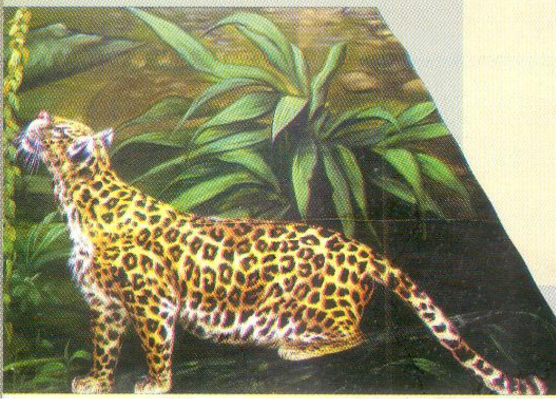

ृतिक विज्ञान संग्रह

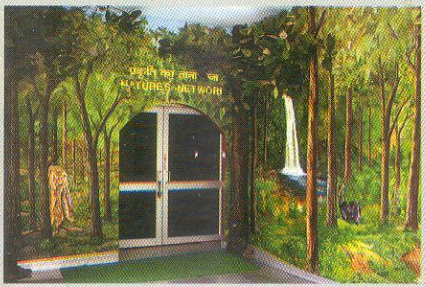

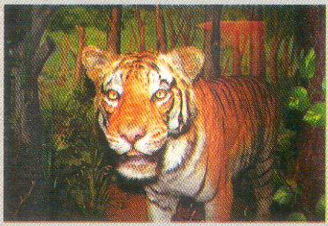

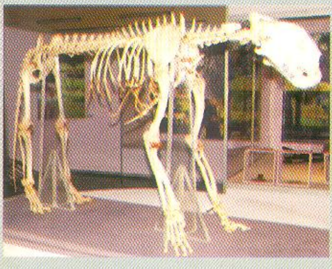

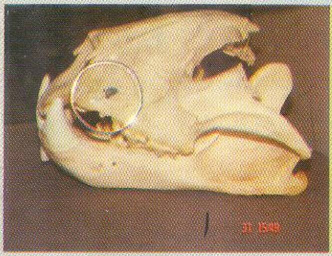

संग्रहालय

संग्रहालय भवन के प्रवेश द्वार पर स्थित स्वागत कक्ष पर आगंतुकों के लिए संग्रहालय से संबंधित समस्त जानकारियाँ उपलब्ध हैं। अस्थि विकलांग आगंतुकों के लिये यहाँ व्हील चेयर की सुविधा भी उपलब्ध है।

संग्रहालय के मध्य में ट्राइसिरेटॉप्स नामक डायनासोर के परिवार का मॉडल देखकर दर्शक आनंदित हो जाते हैं। यहीं पर जीवाश्म उत्खनन क्षेत्र भी है जहाँ पर अनावृत्त जीवाश्म देखे जा सकते हैं।

प्रदर्शित दीर्घाएं

वर्तमान दीर्घा का विषय 'जैव विविधता' है। इसमें मध्यप्रदेश की वनस्पतियों, प्राणियों, भूगर्भ एवं नदियों की जानकारियों के अतिरिक्त प्रकृति के विभिन्न घटकों का आपसी संबंध, विकास के लिए संरक्षण तथा मानव एवं पर्यावरण के संबंध को प्रदर्शित किया गया है।

जैव विविधता

जैव विविधता पर आधारित दीर्घा का उद्देश्य मध्य भारत की जैव विविधता से जनमानस को परिचित कराना है। यह दीर्घा, पौधों एवं जीव-जंतुओं की विविधता, वनों के प्रकार एवं जैविक क्षेत्र की मूल अवधारणा को समझने का अवसर प्रदान करती है। इस दीर्घा में प्राकृतिक संरक्षण के महत्व को समझने तथा प्राकृतिक संसाधनों के बुद्धिमानीपूर्ण उपयोग को बढ़ावा देने के लिए इन प्रदर्शों को तैयार किया गया है।

बायोम्स

दीर्घा भ्रमण विभिन्न प्रकृति आवासों की जैव विविधता को दर्शाने वाली सात प्राकृतिक आवासों के मनमोहक प्रदर्शों से प्रारंभ होता है जिन्हें बायोम्स भी कहते हैं। इन प्रदर्शों में विभिन्न प्राकृतिक आवासों में पायी जाने वाली जैव विविधता को दर्शाया गया है। यहाँ संसार प्रमुख पारिस्थितिक क्षेत्र; महासागर, घास के मैदान, पर्णपाती वन, रेगिस्तान, ऊष्ण कटिबंधीय वर्षा वन, शंकुधारी वन एवं ध्रुवीय प्रदेश को दिखाया गया है। यहाँ इन प्राकृतिक आवासों में पायी जाने वाली वनस्पतियों एवं प्राणियों का उस विशिष्ट आवास के प्रति अनुकूलन समझा जा सकता है।

मध्य भारत की भूगर्भीय जानकारी, प्राणी एवं वनस्पतियां

इस क्षेत्र में मध्यप्रदेश के वनों के प्रकार, भूगर्भीय जानकारी, वनस्पतियों एवं प्राणियों की विविधता तथा वनस्पतियों के आर्थिक महत्व को प्रदर्शित किया गया है। इसी क्षेत्र में मध्यप्रदेश से निकलने वाली तीन प्रमुख नदियों एवं झीलों से युक्त मध्यप्रदेश की नम भूमि के बारे में जानकारी प्रदान की गई है। इसके अगले भाग में मध्य भारत में पाये जाने वाले जीवाश्मों, चट्टानों एवं खनिजों को भी प्रदर्शित किया गया है।

मानव एवं प्रकृति

मानव अपनी सभी आवश्यकताओं जैसे भोजन, वस्त्र, मकान एवं ईंधन की पूर्ति के लिए प्रकृति पर निर्भर है। इसी तथ्य को समझाने हेतु मध्यप्रदेश की बैगा जनजाति का प्रकृति के साथ सामंजस्य एक डायरोमा के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

ालय, भोपाल

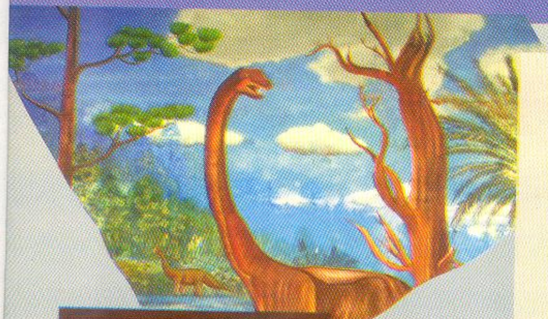

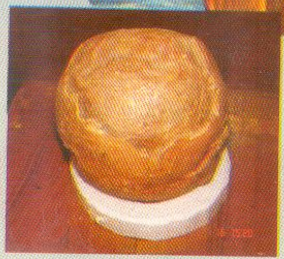

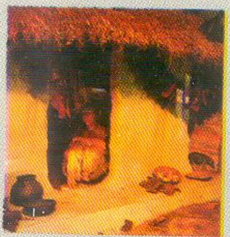

खाद्य श्रृंखला, आहार जाल और खाद्य पिरामिड

प्रकृति में खाद्य निर्भरता हेतु एक जीव दूसरे जीव पर आश्रित रहता है। वनस्पति द्वारा संश्लेषित सूर्य की ऊर्जा न केवल पौधों और वृक्षों के विकास में उपयोगी होती है अपितु सारा जीव जगत इनसे अपनी ऊर्जा की आवश्यकता पूरा करता है। शाकाहारी जीव अपनी भोजन आवश्यकताओं के लिए पेड़-पौधों पर निर्भर रहते हैं तथा मांसाहारी जीव शाकाहारी जीवों पर निर्भर रहते हैं। इस प्रकार एक श्रृंखला का निर्माण होता है जिसे खाद्य श्रृंखला कहते हैं। एक पारिस्थितिकी में अनेकों खाद्य श्रृंखलाएं मिलकर एक जटिल आहार जाल का निर्माण करती हैं। ऊर्जा स्थानांतरण के विभिन्न स्तरों को ऊर्जा या खाद्य पिरामिड द्वारा भी समझा जा सकता है, जैसा कि यहाँ दर्शाया गया है।

मृतभक्षी एवं अपघटक

बाज, गिद्ध एवं लकड़बग्घा जैसे प्राणी, जो मृत जीवों पर आश्रित रहते हैं, उन्हें मृतभक्षी कहते हैं। किसी भी पारिस्थितिकी तंत्र के ऊर्जा प्रवाह के अंतिम चरण में वनस्पतियों एवं प्राणी के शरीर का अपघटन होता है। जीवाणु और कवक मृत कार्बनिक पदार्थों को उनके मूल तत्व में विभाजित कर प्रकृति को वापिस कर देते हैं।

जैव भू-रासायनिक चक्र

जीवन की गतिविधियां जल, कार्बन, ऑक्सीजन, नाइट्रोजन एवं खनिज लवण जैसे कच्चे पदार्थों के चक्रण से निरंतर चलती रहती हैं। जैविक एवं अजैविक पर्यावरण के इस आपसी संबंध को कई भू रासायनिक चक्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। समुद्र, झील एवं नदियों के सतह से कृत जल को अंतहीन जलचक्र द्वारा समझाया गया है। इस क्रिया से ही धरती के विभिन्न भागों पर पानी का पुनः वितरण भी संभव हो पाता है। सभी जीवों में नाइट्रोजन आवश्यक घटक है। नाइट्रोजन चक्र द्वारा हम जान सकते हैं कि किस प्रकार जीव नाइट्रोजन प्राप्त करते हैं। इसी प्रकार खनिज चक्र को भी प्रदर्शित किया गया है।

मानव के अविवेकपूर्ण प्राकृतिक अतिदोहन के कारण अनेकों वनस्पतियां एवं प्राणी विलुप्त हो रहे हैं। हमारा जीवन प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण पर निर्भर है। विलुप्त हो चुके भारतीय चीता के प्रदर्श द्वारा दिया गया यह एक संदेश है। यह जीव अब भारत में दिखाई नहीं देता है।

जीवों का उद्‌विकास

लाखों वर्ष पूर्व धरती पर हुए जीवों के उद्‌विकास के परिणामस्वरूप ही आज विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां और प्राणी पाये जाते हैं। पृथ्वी की उत्पत्ति से लेकर आज तक हुए उद्‌विकास की इस रोचक कहानी को एक विशाल भित्ति चित्र के माध्यम से समझाया गया है, जहाँ दर्शक जीवन के रहस्य को आसानी से समझ सकते हैं। यह भित्ति चित्र आधुनिक मानव के उद्‌भव के साथ पूरी होती है।

खोज केंद्र

खोज केंद्र इसलिए बनाया गया है कि यहाँ युवा दर्शक अपने विभिन्न संवेदी अंगों का प्रयोग कर जानकारी प्राप्त कर सकें। यहाँ पर उपलब्ध किसी भी क्रियाकलाप को चयनित कर उसे अपनी तरह से उपयोग करने की छूट है। यहाँ पर बच्चे संग्रहित वस्तुओं को छू एवं परख सकते

हैं। वे यहां पर चित्रकारी, मॉडल बनाना, जानवरों के मुखौटे एवं पदचिन्ह बनाने जैसे सृजनात्मक क्रियाकलापों में भाग ले सकते हैं। खोजी दर्शक अन्वेषण दराजों में रखी जानकारियों को भी प्राप्त कर सकते हैं तथा प्रकृति से संबंधित अपने ज्ञान को भी परख सकते हैं।

जीव-विज्ञान कम्प्यूटर कक्ष

यह सुविधा हाईस्कूल एवं कॉलेज के विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध है। दर्शक मल्टीमीडिया तकनीक की सहायता से अंतःक्रियात्मक विधाओं का उपयोग करते हुए प्रकृति के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। दृष्टिबाधित दर्शकों के लिए बोलने वाले कम्प्यूटर की भी सुविधा उपलब्ध है।

अस्थायी प्रदर्शनी

संग्रहालय के मध्य क्षेत्र के पास स्थित अस्थाई प्रदर्शनी कक्ष में समसामयिक विषयों पर प्रदर्शनी लगाई जाती है। इस कक्ष में समयांतराल पर प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण जैसे विषयों पर विशेष अस्थाई प्रदर्शनियों का आयोजन किया जाता है।

पुस्तकालय

संग्रहालय के संदर्भ पुस्तकालय में वनस्पति विज्ञान, जंतु विज्ञान, भू-विज्ञान, संग्रहालय विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, वानिकी, वन प्रबंधन, सूक्ष्मजीव विज्ञान आदि से संबंधित 5000 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। आगंतुक पूर्वानुमति लेकर संदर्भ हेतु इन पुस्तकों का उपयोग कर सकते हैं। पुस्तकों को पुस्तकालय से बाहर ले जाने की अनुमति नहीं है।

ईको थियेटर

आगंतुकों हेतु प्रतिदिन सायं 3.00 से 4.00 बजे तक वन्य जीवों से संबंधित फिल्म दिखाई जाती है।

शैक्षिक क्रियाकलाप

संग्रहालय अपने प्रदर्शों एवं शैक्षिक क्रियाकलापों के माध्यम से आगंतुकों के संपर्क में रहता है। इसमें प्राकृतिक विज्ञान में रुचि पैदा करने के उद्देश्य से शैक्षिक क्रियाकलापों को विकसित किया जाता है।

संग्रहालय के क्रियाकलापों पर आधारित ये कार्यक्रम जनमानस को प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रति जागरूक करते हैं।

संग्रहालय निम्नलिखित शैक्षिक क्रियाकलापों को आयोजित करता है -

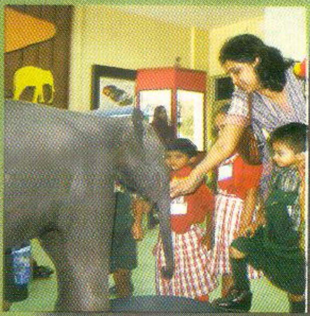

- दीर्घाओं में आगंतुकों का मार्गदर्शन।
- नियमित फिल्म शो एवं दृश्य-श्रव्य प्रदर्शन।
- स्कूली बच्चों के लिए विभिन्न कार्यक्रम।
- विकलांग बच्चों के लिए विशेष कार्यक्रम।
- शिक्षकों के लिए कार्यशाला।
- प्रकृति की चित्रकारी तथा जानवरों के मॉडल बनाने जैसे सृजनात्मक क्रियाकलाप।
- आरक्षित वन क्षेत्रों में अध्ययन भ्रमण।
- पारिवारिक समूहों के लिए विशेष कार्यक्रम।
- वैज्ञानिक एवं लोकप्रिय प्रकाशन।
- विशेष व्याख्यान एवं प्रदर्शनियां।
- संगोष्ठी, कार्यशाला एवं परिसंवादों का आयोजन।
- स्वयं सेवी एवं अन्य सरकारी संस्थाओं के साथ मिलकर कार्यक्रमों का आयोजन।

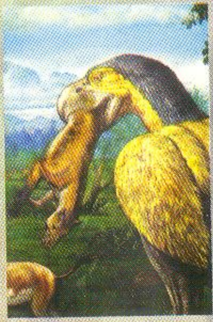

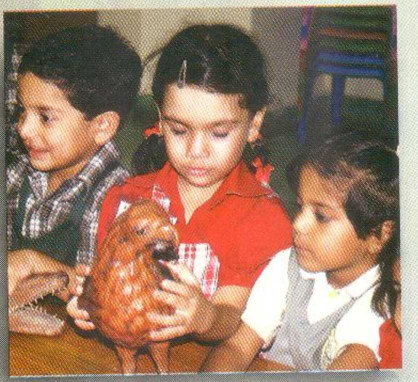

प्रवेश निःशुल्क

पार्किंग निःशुल्क

समय : संग्रहालय प्रतिदिन
प्रातः 10.00 से अपराह्न 5.00 बजे तक
सोमवार तथा राष्ट्रीय अवकाशों को छोड़कर

खोज केन्द्र

प्रातः 10.30 से अपराह्न 1.00 बजे तक
अपराह्न 2.00 से अपराह्न 4.30 बजे तक

जीव विज्ञान कम्प्यूटर कक्ष

प्रातः 11.00 से मध्याह्न 12.00 बजे तक
अपराह्न 3.00 से अपराह्न 4.00 बजे तक

पुस्तकालय

प्रातः 10.00 से 11.00 बजे तक
अपराह्न 2.00 से अपराह्न 3.00 बजे तक

फिल्म प्रदर्शन

अपराह्न 3.00 से अपराह्न 4.00 बजे तक

दूरभाष :

प्रभारी–वैज्ञानिक – 0755-2467551 (कार्या.) 2421132 (नि.)
कार्यालय – 0755 - 2420429
शिक्षा अनुभाग / स्वागत कक्ष–0755 - 2461371
फैक्स : 0755 - 2467551

पत्राचार का पता–

क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय,
पर्यावरण परिसर, ई–5, अरेरा कॉलोनी,
भोपाल – 462016

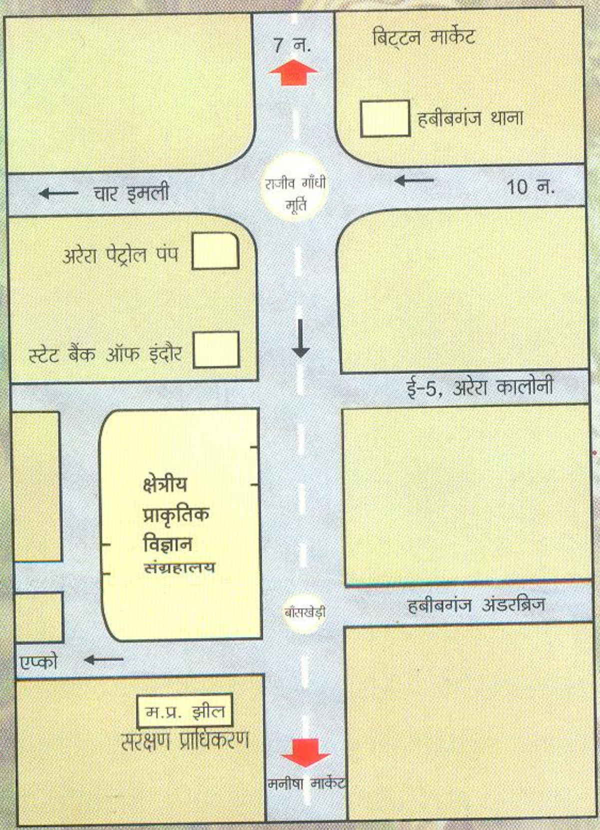

आकल्पनः मध्यप्रदेश माध्यम/2008